अध्याय- 3

मॉरीशस के हिंदी कथा साहित्य का सामान्य परिचय

1 मॉरीशस का उपन्यास साहित्य –

प्रारंभिक उपन्यास- मॉरीशस जैसे नव विकसित राष्ट्र म उपन्यास विधा को बहत बड़ी पृष्टभूमि है| सन १९६० म कृष्ण लाल बिहारी ने 'पहला कदम' नामक उपन्यास लिखकर 'उपन्यास विधा' का आरम्भ किया, उसे लघुकथा या दीघ कथा भी कहा गया| विद्धवानों ने उसे 'लघुकथा' या 'दीघकथा' भी कहा| विद्धवानोंने उसे किस नाम से अभिहित किया जा सकता है इस सन्दभ म अपने मंतव्य प्रकट किये है-

डा.मुनीश्वर लाल चिंतामणि ने 'मॉरीशस का "हिंदी साहित्य" लेख म उन्होंने अपने विचार प्रकट करते हए कहा कि- "कृष्णलाल बिहारीजी ने सन१९६० म अपना लघु उपन्यास 'पहला कदम' छपवाया ....यह लघु उपन्यास को अपेक्षा 'दीघ कथा से अधिक निकट है|(1) उन्होंने मॉरीशस के प्रथम उपन्यास के रूप म कृष्णलाल बिहारी के उपन्यास को ही स्वीकारा है. डा. हरदयाल ने भी अपने शोध प्रबंध "मॉरीशस म हिंदी और उसका साहित्य" म सन १९६० म प्रकाशित हए 'पहला कदम 'उपन्यास को ही सवप्रथम माना है| सन१९६० म श्री कृष्णलाल बिहारी का एक लघु उपन्यास 'पहला कदम 'प्रकाशित हआ| काल क्रम के आधार पर हिंदी म इसे ही पहला उपन्यास समझना चाहिए..........उपन्यास- कला को द्रष्टि से भले ही यह उत्तम कोटि म नहीं आ सकता, किन्तु इसका अपना अलग महत्त्व है ....उपन्यासकार का यह उपन्यास का यह प्रथम प्रयास है| हिंदी साहित्य म उपन्यास को संज्ञा न भी पा सकने का सामथ्य रखता हो तो भी इसे मॉरीशस के हिंदी साहित्य का प्रथम उपन्यास मानना ही पड़ेगा |"(२)

सोमदत्त बखौरी ने मॉरीशस का हिंदी साहित्य जो हिंदी साहित्य का परिचय म संलग्न है| इस लेख म लिखते ह – "सन१९६० म कृष्णलाल बिहारी ने एक लघु उपन्यास 'पहला कदम' प्रकाशित किया था "(३) डा.वीरसेन जागासिंह ने अपने विचारों को व्यक्त करते हए कहते ह – "कहानी लिखते लिखते श्री कृष्णलाल बिहारी ने १९६० म एक लघु उपन्यास लिख दिया था ....इसी 'पहला कदम' को होने का गौरव प्राप्त है|"(४)

'पहला कदम' श्री कृष्णलाल बिहारी का प्रारंभिक प्रयास है| मने यह पुस्तक सिफ हिन्दू जाति को जीवित रखने और हिंदी भाषा को धारा बहाने के उद्देश्य से बनाई है| मने एक प्रेम द्रश्य खींचा है जो साहित्य रूपी गुण से सिंचा है|(५) दूसरी और अभिमन्यु अनत जी के उपन्यास मिलते ह| करीब १० उपन्यास देखे जा सकते ह और नदी बहती रही (१९७०), आन्दोलन (१९७१), एक बीघा प्यार (१९७२), जम गया सूरज, हड़ताल कल होगी, लाल पसीना (१९७७), चौथा प्राणी (१९७७), कुहासे का दायरा (१९७८), तीसरे किनारे पर (१९७६) और शेफाली (१९७९) ये सभी उपन्यासों का प्रकाशन भारत म ही हआ है. इन सभी उपन्यासों म भारतवंशी अपने

जनजीवन को ही बात कहते द्रष्टिगत होते ह | मॉरीशस के भारतवंशी साहित्यकारों को उदारवादी द्रष्टिकोण होने पर भी संस्कृति के विनाश के भय से सदैव भयभीत नजर आ रहे ह|

अभिमन्यु अनत जी को कथा सम्राट कहा गया है| अभिमन्युजी का प्रथम उपन्यास 'और नदी बहती रही'(१९७०)है| उपन्यास को कथा का कद्र मॉरीशस समाज और वहां के जीवन को प्रमुख समस्या मालिक, मजदूर, प्रेम–विवाह तथा सांस्कृतिक संघष और पीड़ा को है| खेतिहर वग से जुडा हआ नि:स्वाथ प्रेम है| कथा-तत्व के आधार पर हिंदी का प्रथम मॉरीशस का उपन्यास के रूप म 'और नदी बहती रही'को माना जाता है| उससे पहले अनुदित उपन्यास भी आये १९५७ म 'कांजी द' उपन्यास आया था, फिर मौलिक उपन्यासों का विकास हआ| श्री ब्रजनाथ माधव वाजपेयी ने सवप्रथम प्रसिद्ध फ्रेंच – साहित्यकार वाल्तेयर के ''कांजी द' उपन्यास का सन१९५७ म साहित्य अकादमी दिल्ली से प्रकाशन करवाया| उसके बाद ही हिंदी के उपन्यासों के अध्ययन का ध्यान आकषित हआ|

'कांजी द' 'पाल एन्ड विजिनी' तथा 'जाज' का अनुवाद किया गया| हिंदी से पहले फ्रेंच और अंग्रेजी साहित्य का वचस्व रहा| हिंदी उपन्यास को सामग्री के लिए यह अनुदित उपन्यासों का अधिक महत्त्व रहा है|

- **<u>उपन्यास –विधा का काल विभाजन –</u>**

मॉरीशस के हिंदी उपन्यासों को अध्ययन को सुविधा के लिए निम्नलिखित आधार पर विभाजित किया गया है-

(1) स्वतंत्रता पूव युग के उपन्यास (सन १९६८ से पूव का युग)

(2) स्वातंत्र्योतर या अभिमन्यु अनत युग (सन १९६८ से अब तक)

(1) स्वतंत्रता पूव के उपन्यास को दो भागों म देखा जा सकता है.
(1)अनुदित उपन्यास और (२) मौलिक उपन्यास
अनुदित उपन्यास म फ्रेंच और अंग्रेजी के तीन उपन्यासों को पहले भी उल्लेख किया है. 'कांजि द'. 'पाल एन्ड विजिनी', 'जाज' तीन उपन्यास है.

मौलिक उपन्यास म १९६० 'पहला कदम' श्री कृष्णलाल बिहारी का सामाजिक उपन्यास है| दूसरा उपन्यास "रूप किशोर और सुजाता" प्रो.वासुदेव विष्णुदयाल का 'लघु उपन्यास' है| प्रो.वासुदेव विष्णुदयाल ने मॉरीशस से ही 'ज़माना' पत्रिका म १९६२ से धारावाहिक रूप से प्रकाशित करवाया था| १९६५-१९६६ समय म उपन्यास पूण हआ था. तत्कालीन राष्ट्रीय चेतना सामाजिक परिस्थितियों के परिद्रश्य म प्रस्तुत किया है|

स्वातंत्र्य पूव मॉरीशस म हिंदी साहित्य म केवल दो ही लघु उपन्यास' प्रकाशित हए है|

- **<u>स्वातंत्र्योतर युग या अभिमन्यु युग (१९६८ से अब तक)</u>**

स्वतंत्रता के पश्चाताप ही सभी उपन्यासों का प्रकाशन हआ है| उपन्यास को द्रष्टि से विषय वैविध्य शिल्पविधान को द्रष्टि से मॉरीशस म अभिमन्यु अनत जी ने आरम्भ किया. इसलिए इस युग का अभिमन्यु अनत

युग या अनत युग कहना समीचीन होगा. स्वतंत्रता के पश्चात् विकसन और उसको समृद्ध परम्परा को पुष्ट किया. अत:उपन्यास के सूत्रपात एवं वैविध्यकारिणी विकास परंपरा के पोषक के नाम पर स्वातंत्र्योतर के इस युग को “अनत युग” कहना साहित्य को गौरवान्वित करना है.

अभिमन्यु अनत मॉरीशस के कथा सम्राट है. जैसे भारत म प्रेमचंद ने अपना विशिष्ट स्थान प्राप्त किया वैसे मॉरीशस म अभिमन्यु अनत जी का है. मॉरीशस के सवप्रथम हिंदी उपन्यास “और नदी बहती रही”(१९७०)है, जिसके लेखक अभिमन्यु अनत है.

इस युग म भी दो प्रकार के उपन्यास प्राप्त होते ह -

(1)अनूदित उपन्यास साहित्य

(२)मौलिक साहित्य

(1)अनुदित उपन्यास साहित्य –

स्वातंत्र्य पूव के अनूदित उपन्यासो म फ्रेंच उपन्यास “पाल एन्ड विजिनी”तथा अंग्रेजी उपन्यास “दैट अदस माईट लिव”का अनुवाद किया. “पाल एन्ड विजिनी” का अनुवाद प्रस्तुत हआ. प्रहलाद रामशरण ने फ्रेंच लेखक वेरनाद –से –प्येर के “पाल एन्ड विजिनी”का अनुवाद हआ. लेकिन प्रो.वासुदेव विष्णुदयाल तथा प्रहलाद रामशरण के अनुवाद म कई प्रकार को मौलिक भिन्नताएँ द्रष्टिगत होती है. प्रो.वासुदेव विष्णु दयाल ने जो अनुवाद किया उसम उन्होने कथ्यगत और शिल्पगत कोई विशेष परिवतन नहों किया है, जबकि प्रहलाद रामशरण के अनुवाद म यूरोपीय आत्मा का (कलेवर) का भारतीयकरण कर दिया गया हो ऐसा लगता है.

दूसरा उपन्यास “ दैट अदस माईट लिव” (१९८१)दीपचंद बिहारी का मूल उपन्यास है. “ताकि वे जी सक”(१९७६)म उसका अनुवाद श्री योगेन्द्र शमा ने किया है. इस उपन्यास म भारत ‘गंगा’ नामक जहाज से चलकर “महारानी जहाज १०३ से लौटने के बीच म जो जो घटनाएं हई. उसी का एक सजीव चित्र उपन्यास म अंकित हआ है. भारतीयों के साथ जो जुल्म हए है और यातनाएं उनको सहन करनी पड़ी मजदूरो और मालिको के बीच संघष करने पड़े उसका वणन है.

अनूदित उपन्यासो म फ्रेंच तथा अंग्रेजी दोनो से ही मिलते है.

(२)मौलिक उपन्यास – साहित्य-

“मॉरीशस म मौलिक उपन्यास लेखन का काय अधिक हआ है. यधपि संख्यात्मक वृद्धि अवश्य हई है. तथापि उसको गुणात्मकता म वृद्धि अवश्य हई है. इस विषय म मॉरीशस के उपन्यासकार अभिमन्यु अनत को टिपण्णी द्रष्टव्य है, जिन्होने उन्होने मॉरीशस के उपन्यास साहित्य के लेखन पाठन तथा पुरस्कारो के सन्दभ म लिखा है.”(६)

अभिमन्यु अनत का योगदान

"अभिमन्यु अनत मॉरीशस के हिंदी कथा साहित्य के सम्राट है. उनका जन्म ९ अगस्त १९३७ को मॉरीशस के उत्तर प्रांत म स्थित त्रियोले गाँव म हआ. उन्होने १८ वर्षों से हिंदी का अध्यापन काय किया और वे सालो तक युवा मंत्रालय म नाट्यकला विभाग म नाट्य प्रशिक्षक रहे. उन्होने अपनी उच्च स्तरीय हिंदी उपन्यासों और कहानियो के द्वारा मॉरीशस को हिंदी साहित्य म मंच पर प्रतिष्ठित किया. अभिमन्यु अनत का जनम एक गरीब परिवार म हआ. आथिक कठिनाईयो की वजह से वे सुचारू रूप से औपचारिक शिक्षा अधिक ग्रहण कर पाए लेकिन अपने श्रम से प्रसिद्ध लेखकों की रचनाओं पढ़कर उन्होने अपनी लेखकीय कला का प्रमाण दिया. वे एक सजग, प्रतिबद्ध और कमठ रचनाकार है."(७)

अभिमन्यु अनत हिंदी के साथ -साथ अंग्रेजी फ्रेंच आदि भाषाओं के भी विद्वान् है. अपनी रचना धमिता हेतु मॉरिशसेतर देशों म भी प्रसिद्ध है. अनत जी को मॉरीशस का कथा सम्राट एवं प्रेमचंद कहा जाता है. दूसरे शब्दों म अनत जी मॉरीशस के प्रेमचंद है. एक ऐसे रचनाकार है जिन्होने कबीर की तरह बेबाक कहने की अदा है. "प्रेमचंद जैसी समस्याओं की पकड़ है, तो प्रसाद जैसा ऐतिहासिक –सांस्कृतिक गौरव के अनुकूल एक नए देश के निमाण की मंगलमयी आस्था का स्वर उन्कायह साहित्यिक व्यक्तित्व कोई ओढ़ी हई बाहरी प्रवृति का प्रतिफलन नहीं है, अपितु मातृ-दुग्ध पान के साथ मिली जन्मजात सांस्कारिक विद्रोही चेतना एवं समाज परिवेशजन्य स्वयं भू चेतना का प्रतिफलन है."(८)

अभिमन्यु अनत जी के उपन्यास जो प्रकाशित हो चुके ह-

1.और नदी बहती रही (१९७०)

२.आन्दोलन(१९७१)

३.एक बीघा प्यार (१९७३)

४.जम गया सूरज (१९७३)

५.तीसरे किनारे पर (१९७६)

६.चौथा प्राणी (१९७७)

७.तपती दोपहरी (१९७७)

८.लाल पसीना (१९७७)

९.कुहासे का दायरा (१९७८)

१०.शेफाली (१९८९)

११.हड़ताल कल होगी (१९७९)

१२.चुन –चुन चुनाव (१९८१)

१३.अपनी तलाश (१९८२)

१४ .अपनी अपनी सीमा (१९८३)

१५ .पर पगडंडी नहीं मरती (१९८३)

16. गांधीजी बोले थे (१९८४)

१७. फैसला आपका (१९८६)

१८.माक ट्वेन का स्वग (१९८६)

19.मुडिया पहाड़ बोल उठा (१९८७)

२०.अचित्रित

२१.शब्द भंग

22.जयगांव का बहादुर (बाल उपन्यास)

23 और पसीना बहता रहा (१९९३)

अभिमन्यु अनत की उपन्यास की यात्रा काफी लम्बी है. अनत युग म

मॉरीशस के अन्य हिंदी लेखकों म रामदेव धुरंधर अनत जी के बाद मॉरीशस म प्रसिद्ध उपन्यासकार माने गए ह, उनका जन्म ११ जून सन १९४६ को करोलिन बेल –एर मॉरीशस म हआ. रामदेव धुरंधर ने अपनी रचनाओं का आधार खेतों म मजदूरों को और जमींदारों के अत्याचारों का शोषण के शिकार बनते हए निबल और नि:सहाय लोगों की संवेदना को अपना साहित्य का आधार बनाया है.

उनके प्रमुख उपन्यास इस प्रकार है-

1. चेहरों का आदमी (१९८१)
2. छोटी मछली बड़ी मछली (१९८३)
3. पूछो इस माटी से (१९ ८६)
4. बनते बिगड़ते रिश्ते (१९९०)

५.सहमे हए सच (१९८०)(धारावाहिक वसंत अंक 23 से ४२ तक म प्रकाशित)आदि. उपन्यास लिखे है.दीपचंद बिहारी का भी नाम उल्लेखनीय है. मूलत: फ्रेंच और अंग्रेजी के लेखक होने के बावजूद भी हिंदी

साहित्य म उनका योगदान रहा है.उनका जन्म १३ दिसंबर १९२७ को मॉरीशस म हआ. लेखक ने अंग्रेजी के "दैट अदस माईट लिव"उपन्यास का हिंदी हिंदी रूपांतरण "ताकि वे जा सके" का अनुवाद किया. उन्हाने हिंदी म "मसीहे नरक जीते है"(१९८०)उपन्यास का प्रकाशन लिखा.

वेणी माधव राम खेलावन का जन्म सन १९२९ म उत्तर स्थित पुद्रदोर हामलेट नामक गाँव म हआ. वेणी माधव रामखेलावन ने अंग्रेजी, फ्रेंच, संस्कृत और हिंदी सभी म विशेष ज्ञाता माने जाते है. 'अमर प्रेम' (१९८५) उपन्यास उन्हाने हिंदी म लिखा. दूसरे अन्य उपन्यासकारा म विष्णु दत्त मधु जी का नाम भी काफा चचित रहा है. उनका जन्म हिंदी उपन्यास "फट गई धरती" (१९७५) म प्रकाशित हआ.

अभिमन्यु अनत के "अनत युग" म आनंद दबी का भी उल्लेख मिलता है. श्री आनंद दबी का जन्म मॉरीशस के ग्रां बै म २७ अप्रैल १९५३ को हआ. हिंदी म उपन्यास "कसूर किसका"(१९८५) प्रकाशित हआ. आस्तानंद सदासिंह का जन्म त्रियोले, रॉयल रोड मॉरीशस हआ. "मांस भक्षी" (१९८६) हिंदी उपन्यास प्रकाशित हआ. हीरालाल लीलाधर का "सगाई"(१९८८) म हिंदी उपन्यास प्रकाशित हआ.

इस युग म स्वतन्त्र उपन्यास और कुछ पत्रिकाओं म धारावाहिक रूप से भी उपन्यासा का प्रकाशन हआ था. उन उपन्यासा म निम्नलिखित है-

1.अभिमन्यु अनत –चौथा प्राणी, लाल पसीना, गांधीजी बोले थे आदि

२.रामदेव धुरंधर-सहमे हए सच, (वसन्त) म धारावाहिक रूप म

३.कृष्णलाल बिहारी –लाल पानी अधूरी, प्रभात त्रैमासिक म 'प्यासी झील'

४.दानीश्वर शाम 'बैरागी' 'जिहाद', 'दपण' पत्रिका म लघु उपन्यास 'विकलित पागल'(वसंत अंक म १५ से २० म समाप्त धारावाहिक)

५.हीरालाल लीलाधर 'सगाई' वसंत म धारावाहिक इस प्रकार लेखका ने अपने उपन्यासा को प्रकाशित करवाया.

➢ अभिमन्यु अनत के औपन्यासिक वैशिष्ट्य –

हिंदी मॉरीशस साहित्य म साहित्य म अभिमन्यु अनत जी का विशेष स्थान है. अनत जी के उपन्यास साहित्य म समग्र मॉरीशस समाज साकार हो उठा है. भारतीय समाज का समस्या विश्व फलक पर प्रतिबिम्ब हई है. अनत का रचनाएं अतीत के गव और श्रद्धा आस्था का, संघष, पीड़ा, आक्रोश, दद का कहानिया का है. अनत जी ने समाज के वास्तविक चित्र को प्रस्तुत किया है.

मॉरीशस समाज का विविध समस्याओं का चित्रण, खेता के लिए जूझता किसान, मजदूरा के हक़ और अधिकार का लड़ाई निरंतर संघष गोर काले का भेद –भाव, अस्तित्व का लड़ाई ऐसे भ्रष्टाचार, रिश्ता का

टूटना, मूल्यों म गिरावट, विस्कृति कारण ,महंगाई, जाति भेद, बेकारी, हताशा, विषमताएं, अवमूल्यन, राजनीतिक कुचक्र, भाई भतीजावाद आदि सभी विषयों को रचनाओं म स्थान दिया है.

शिल्प गत वैशिष्ट्य –

अभिमन्यु अनत जी ने अपने उपन्यासों म विविध शिल्पों का प्रयोग किया है. उन्होंने अलग-अलग शैली म उपन्यास लिखे. जैसे 'इंटरनेट' लेकर 'अपनी –अपनी सीमा'उपन्यास लिखा जब को 'लाल पसीना' किसान सिंह को 'हस्तलिखित पुस्तिका ' के माध्यम से अतीत को विश्वसनीयता और उसको सुरक्षा भी को है. 'शेफाली' उपन्यास 'टेलीफोनिक'संवाद के टेकनीक पर लिखा गया उपन्यास है.

संघष -

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों म संघष व्यक्ति को आशा एक प्रतीक्षा को वैचारिक द्वन्द को झलक द्रष्टिगत होती है. लेखक ने हम जैसे पाठकों को बैचेनी का अहस करवाया है. यह उनको विशेषता रही है शायद बैचेनी को वजह से उस संघष, विचार, प्रश्नों, □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□□. चिंतन को नई राह प्रदान करना ही मूल उद्देश्य है. □□□□□ □ □□□□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□देश□ को नुकशान नहीं पहँचाना चाहिए. □□□□□ '□□□ □□□□□' □□□□ □□□□□□, '□□□□□ □□ □□□□', '□□ □□' ,'□□□□ □□□□'आदि उपन्यास म लेखक को □□□ □□□□ □□ □□□ □ □□□□ □□संवादों म हिंदी भोजपुरी क्रिओली शब्द के लिए कही भी फुट नोट को पाठक को आवश्यकता नहीं रहती है. वैसे भोजपुरी के संवादों का प्रयोग अनत जी ने अधिक किया है. □□□ के साथ भोजपुरी का प्रयोग ऐसे हआ है. अगर हिंदी से भोजपुरी हटा दी जाए तो वह आकषक नहीं रहेगी. अनत जी के उपन्यासों म लयात्मक ध्वन्यात्मक उपन्यास और भी सजीव रूप देते हए द्रष्टिगत होते ह. □□□ कभी अधूरेपन वाक्यों का भी लेखक ने प्रयोग करके उपन्यासों को नया मोड़ दिया है.

उपन्यासों का वर्गीकरण-

1.□□□□□□□□□□□□□ □□□□□

□.□□□□□□□ □□□□□

□.□□□□□□□ □□□□□

□.मनोवैज्ञानिक उपन्यास

□.व्यक्तिवादी उपन्यास

□.□□□□ –प्रयोगवादी उपन्यास

1.□□□□□□ □□□□□ –

➢ अनत युग के उपन्यासों म सामाजिक सरोकार

मॉरीशस के हिंदी उपन्यासों म समाजकी समस्याओं से जुड़े और समाज की गतिविधियों को प्रतिबिम्ब [illegible] ‘[illegible]’ ([illegible])[illegible] श्री [illegible]री ने सीधे सपाट कथानक के माध्यम से समाज म प्रेम विवाह की समस्या को उठाया है. [illegible] की परम्पराओं के बीच कहानी का दुखांत समाज के यथाथ को उजागर करता है. [illegible] उपन्यासों म समाज की समस्या को विशेष स्थान दिया है एक साहित्यकार समाज का भविष्यद्रष्टा भी है. [illegible]

[illegible] “[illegible]”म धनेश्वरी और राजेश के प्रेम विवाह की कथा है. [illegible] “[illegible]” [illegible] –[illegible], “[illegible]” [illegible], “[illegible]” [illegible] “[illegible]” [illegible]–[illegible], “[illegible]” उपन्यास म मीरा –[illegible], “[illegible]” [illegible]-[illegible] मान्यताओं द्रढ़ विश्वास को बनाये रखा है अनेक उपन्यासों म समाज की संस्कृति और परम्परा को जीवित रखा है. आज जब देखा गया है की विसंस्कृति करण ने चारों ओर से जकड लिया है. ऐसे म लेखक का शिकार तो नहीं हो [illegible]? [illegible] बढ़ता सांस्कृतिक साम्राज्य वाद के शिका[illegible], [illegible], [illegible], [illegible] जोड़ते हए सामाजिक सरोकारों को अभिव्यक्त किया है. [illegible]

मॉरीशस म सामाजिक रीत रिवाज और पव त्यौहारों को उत्सव के रूप म मनाया जाता है. [illegible] से नाता तुड जाएगा तो शायद अस्तित्व के लिए खतरा है. [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible],([illegible])तथा शिवरात्रि जैसे पर्वों को सांस्कृ[illegible] म बांधकर रखने वाले यह सामाजिक त्योंहार नया उमंग भी भरते ह. इन्हीं के चलते भाषा भी सुरक्षित है. [illegible] मातृभाषा म अपनी विचारधारा को व्यक्त करने की प्रेरणा भी मॉरीशस के लोगों को मिली है.

➢ “[illegible]”[illegible]

[illegible] “[illegible]” [illegible] मॉरीशस के मजदूरों की दयनीय हालत, [illegible], [illegible], [illegible], शोषण और आक्रोश की कहानी है. इसके साथ धनेश्वरी राजेश और मधुवन सुमित्रा के प्रेम विवाह और उसकी समस्या की परिस्थितियों का चित्रण [illegible] लेखक ने उस समय समाज म स्त्रियों की विवशताओं को भी प्रस्तुत करते है. [illegible] म होने वाले अत्याचार और शोषण की कहानी लेकर प्रेमचंद आते ह, वैसे ही अभिमन्यु अनत जी भी शाहकारों से [illegible] परिस्थिति कज म डूबे किसान की लाचारी को भी अभिव्यक्ति करते ह.

➢ [illegible] –

➢ “[illegible]”-[illegible]

इस उपन्यास म समाज को विभिन्न स्थितियों का चित्रण मिलता है. जैसे की मूल कथा म मजदूरों के आन्दोलन का [illegible], लेकिन इसके साथ साथ मजदूरों को परिस्थिति [illegible], [illegible], युवा वग को समस्या, [illegible], [illegible], आन्तरधर्मीय विवाह और उससे चलते अनेक समस्याओं का वणन रवि और सलमा तथा रमावती जैस पात्रों को गढ़कर प्रस्तुत किया है.

➢ “[illegible]” -[illegible]

इस सामाजिक उपन्यास म मजदूरों को समस्या के साथ लिखक ने प्रेम विवाह को लेकर समाज म होने वाली [illegible] मजदूरों के संगठन के बल पर मजदूरों को उपलब्धियों से भी ख़ुशी हई है. [illegible]

➢ [illegible]

[illegible] ‘[illegible]’ [illegible], [illegible], अशोक शिला को प्रेम कथा तथा कॉलेज जीवन को शैली, [illegible], खेतों म मजदूरी करने [illegible] नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं पर भी लेखा ने प्रकाश [illegible]

➢ [illegible]

‘[illegible]’ [illegible] लेखक उन अभाव ग्रस्तों को स्थिति को उजागर किया है. [illegible] सिरपरसाद का परिवार के प्रति समाज का द्रष्टिकोण का [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]
देश को आजादी के साथ सामाजिक मान्यताओं का भी उपन्यास म समावेश किया है.

➢ [illegible]

[illegible]रीशस के निम्न वर्गीय परिवार को कहानी है वास्तविक धरातल पर अपना चित्र प्रस्तुत करनेवाला [illegible] ‘[illegible]’ [illegible] शोषित समाज और उसके दद का बयां करनेवाली यह कहानी समाज को सच्ची [illegible], [illegible]घष को कहानी है.

➢ [illegible]

‘[illegible]’ [illegible] म प्रकाशित हआ यह एक सामाजिक उपन्यास है. लेखक ने ग्राम्य जीवन को समस्याओं को कद्र म रखा है. वग भेद वण भेद, आथिक असमानता जमींदार मजदूर आदि जीवन के विभिन्न पहलुओं को उपन्यास म समा[illegible]ष्ट [illegible]

- [illegible]

लेखक ने समाज म व्याप्त वेश्या जीवन तथा उससे उत्पन्न त्रासदी उपन्यास के कद्र म रखा है. [illegible] तो फिर वेश्या औरत क्यों नहीं होती ? इस सवाल से स्त्री के जीवन को दयनीयता और मजबूरी का सही और वास्तविक तस्वीर प्रस[illegible]

- [illegible]

[illegible] ‘[illegible]’ उपन्यास प्रकाशित हआ.[illegible], [illegible] असामाजिक तत्वों को जड़ से उखाड़ फकने के लिए नायक का संघष द्रष्टिगत [illegible]

- **स्वातंत्र्योतर उपन्यासों म सामजिक सरोकार –**

स्वातंत्र्योतर युग –([illegible]-[illegible]) म अभिमन्यु अनत के अलावा भी अन्य लेखकों का सामाजिक उपन्यासों म [illegible] ([illegible]) यह उपन्यास एक सामजिक उपन्यास है. नायक और नायिका के द्वन्द को कथा है. [illegible], जमीन को इच्छा तथा नारी के सामाजिक प्रतिकार को कहानी है. [illegible] “[illegible]”([illegible]) [illegible] उपन्यास को चार खण्डों म विभाजित किया है. “[illegible], [illegible], [illegible] को चौथे भाग म विक्रम को खोयी सुन्दरता भी थी, अंजू से जुड़कर विक्रम को बचपन को याद प्रारंभिक शिक्षा, [illegible], [illegible], [illegible] यातना मजदूरों के संघष, भूतप्रेत आदि अनेक सामाजिक समस्याओं को भी उपन्यास के आधार बनाया है.

- [illegible] ([illegible])

इस उपन्यास म एक अदालत को मानसिक प्रक्रिया का कथात्मक रूप हो गया है, [illegible] नायिका प्रिया सिबालिक को फ्रांस से [illegible]

[illegible] इतना रूपया प्रिया के पास कहाँ से आया? [illegible]? [illegible] मंत्री के साजिश और सुनीता नाम की महिला की इर्ष्या और प्रतिशोध की भावना का शिकार होती है. [illegible] का पति उसे कुछ पूछता भी नहीं है जब कि पूव प्रेमी मनोज प्रिय की जमानत करवाता है. अब प्रिया के मन म [illegible] अदालत की प्रकिया चलती रहती है. [illegible] और विपक्ष के वकील की दलीलों के बारे म सोच रही है. लेखक उपन्यास के अंत म महसूस करते ह कि “[illegible] ! [illegible]? [illegible]” [illegible] पाठकों से और समाज से अपील करते हए. [illegible] “[illegible]”

➢ [illegible] ([illegible])

[illegible] “[illegible] ([illegible]) [illegible] नायक नायिका के माध्यम से प्रेम और समाज की यथाथ घटना [illegible] समाज म चारों ओर [illegible], आथिक परिस्थितियां, [illegible], देश की अस्मिता, [illegible], [illegible] नीच का भेद भाव आदि परिस्थितियां भी लेखक ने उपन्यास के माध्यम से व्यक्त की है. [illegible]

➢ [illegible] ([illegible])

[illegible] उपन्यास की नायिका एक नेता के रूप म कारखाने के मालिकों एवं सता पक्ष के मंत्रियों को हिला देती है. [illegible], [illegible], पुलिस जो समाज के जिम्मेदार वग के करतूतों का भंडाफोड़ करती है.

➢ [illegible]([illegible])

”[illegible]” एक सामाजिक उपन्यास है नशीले पदार्थों का सौदा करके दंश को मौत की खाई को धकेलने के लिए कोशिश करने वालों का इस उपन्यास म नायक रोबीन के माध्यम से पदाफा[illegible] रातोंरात अपनी तिजोरी भरने वालों का साली चेहरा उजागर होता है. समाज म उच्च आदशों के नाम अपना [illegible]

➢ [illegible]-

ऐतिहासिक उपन्यासों म मॉरीशस का इतिहास –

मॉरीशस के ऐतिहासिक उपन्यास साहित्य म अधिक उपन्यास नहीं है ऐतिहासिक उपन्यासों म चार उपन्यास को ले [illegible] – [illegible] ([illegible]) [illegible] “[illegible]”([illegible]) श्री दीपचंद बिहारी के उपन्यास “[illegible]”([illegible]) [illegible]

□□□□ □□□□□□ के आजादी के पयत तक को महत्वपूण ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख अवश्य है लेकिन इतना प्रभावशाली नहीं है दूसरा एक अंग्रेजी उपन्यास “□□□□□ □□□□ □□□” (□□□□) □□ □□-□□□ □प्र□□□□ □□□□ □□

□□□□□ □ □□□□□□ □पूवजों के साथ हई यातनाएं, □□ –□□□ □□□□, □□□□ □ □□□□ □□□□, □□क्ष, □□□, □-□□□□, □□□□□त्र, □□□ □□□□, इतिहास का संघष और समाज की परिस्थतियों का साहित्य के पृष्ठों म चित्रित □□□□ □□

- □□□ □□□□□ (□□□□)

“□□□ □□□□□” अभिमन्यु अनत का बहत चचित ऐतिहासिक महाकाव्यात्मकता उपन्यास है. “□□□ □□□□□” उपन्यास को दो खण्डों म विभाजित किया है. लेखक ने इस उपन्यास म सन □□□□ □□□□□ □□ □ □□□□□ □ को उपन्यास म अभिव्यक्ति किया है. भारतीय मजदूरों के संघषों की कहानी है. उपन्यास के आरम्भ म मॉरीशस द्वी□ □जन्म की कहानी है. मॉरीशस द्वीप के अंतिम औपनिवेशक शासन कल म अंग्रेजों का आधिपत्य भले ही रहा हो लेकिन आथिक सत्ता फ्रांसिसी गोरे लोगों के हाथ म ही रहा और कूली मजदूरों का शोषण होता रहा.

□□-□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □गाँव म रहकर उसे प्रतीत होता है कि जिस प्रकार से जेल म नारकीय जीवन जीना पड़ता है. □□□ □□□□□ प्र□□ से मजदूरों म नया जोश पैदा होता है. समाज म बैठका का आयोजन करके मजदूरों को संगठित करता है और मालिकों के दुव्यवहार और अत्याचार को रोकने का प्रयत्न करते ह.

जब कि द्वितीय खंड म किसान सिंह बूढा हो गया है उसकी पत्नी रेखा की मृत्यु हो गयी है और बीटा मदन सिंह को सात साल की कैद की सजा मिली है उसे इस बात का संतोष है की उसका बेटा विद्रोही, क्र□□□□ □□ □□□ □□ □रुद्ध चलनेवाला है इसलिए उसे विश्वास है कि वह मजदूरों के जीवन म परिवतन लायेगा.

लेखक ने मॉरीशस की समृद्धि और विविध प्रदेशों से रोजी रोटी कमाने की तीव्र ईच्छा से अपनी मातृभूमि को त्यागकर चले आए थे उन समग्र लोगों की कथा की ददनाक कहानी है. □□□-□□□ □□ इन्सान ही नहीं माना जाता □□. मजदूरों की अस्मिता, स्□□□ □□□□□, □□□-□□□ □□□, स्वास्थ्य सभी अधिकारों को छीन लिया गया था उपन्यास म कुंदन, □□,रू□□□□, □□□, □□□ –मुनेस आदि सभी मजदूरों की ददनाक कहानी है. □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□ □□□□ स्□□□□ □□□□□कोठी के बाहर की दुनिया म प्रवेश की बिलकुल इजाजत नहीं □□. मानवाधिकारों को क्रूरता से कुचल देने का सामंतवादी प्रवृति के लोगों के घिनौने खेल का पदाफाश भी करता □अभिमन्यु अनत का यह उपन्यास “□□□ □□□□□”मानव अधिकारों को रौंदने, □□□□□□ “□□□” □□ □□□□□ □□□□. यहाँ दुभाग्य से शोषण कताओं ने मानव को मानव न मानकर उसके समस्त वैयक्ति, □□□□□□, □□□□□, □□□□, □□□□, सांस्कृतिक अधिकारों को छीन लिया था उसीका इस उपन्यास म बड़ा ही मामिक ढंग से वणन □□□□ □□

[illegible] "मुझे संघष कथाएँ परियों की कहानियों से अधिक प्रभावित [illegible]. जब खेतों म पत्थरों की मेड़ो को देखता, [illegible]. खेतों की गहरी हरियाली मुझे बरसात के पानी की सिंचाई का फलण दीखकर लगता [illegible] कि गन्ने की जड़ों म मेरे दादा दादी और नाना –[illegible] प्र[illegible] जब म खेतों से जुडा तो वहां से मजदूरों की स्थिति को झेलकर इतिहास की यातनाओं को [illegible]. उन्हीं दिनों मेरे भीतर लाल पसीना लिखने की छटपटा [illegible]. [illegible] होते रहे कि अपनी अस्मिता से इस तरह से कटते जा रहे लोग क्या अपनी पहचान को बनाये रखने के लिए [illegible]? प्रलोभन म आकर डेढ़ सौ साल की संस्कृति को नीलाम कर देने का [illegible]? [illegible] श्र[illegible], [illegible], ताकि इतिहास की उस शारीरिक गुलामी से बदतर एक मानसिक गुलामी को नयी पीढ़ी स्वीकारने से [illegible] "[illegible]" [illegible].([illegible])

➢ [illegible]([illegible])

[illegible] ऐतिहासिक उपन्यास है. यह लाल पसीना उपन्यास की संघष प्रक्रिया की [illegible] '[illegible]' [illegible] कथा यहीं से शुरू होती है वह सन [illegible] अभिमन्यु अनत कहते ह –"[illegible] बच्चों को उचित शिक्षा दिलाएं और अपने म राजनीतिक चेतना लाकर राजनीति म हिस्सा ल. [illegible] बातों का जो प्रभाव वहां के जन समुदाय पर पड़ा और उससे [illegible], [illegible] "[illegible]" की अगली कड़ी के रूप म लिखा गया यह उपन्यास का मकसद है-[illegible] वैचारिक क्रांति म बापूजी का सहयोग."([illegible]) [illegible] इतिहास के दस्तावेजों के समन्वय की [illegible]

[illegible], [illegible], भाषणों की प्रतिक्रिया, [illegible], [illegible]

➢ [illegible] ([illegible])

[illegible] '[illegible]', '[illegible]' [illegible] '[illegible]' ये तीनों उपन्या[illegible] त्रिकथा के रूप म है. '[illegible]' प्र[illegible] गांधीजी बोले थे सामाजिक उत्थान की कथा प्रकाशित हई है जब कि अंतिम कड़ी म और पसीना बहता रहा. [illegible] उपन्यासकारों म श्री रामदेव धुरंधर का भी अपना विशेष महत्व [illegible] "[illegible]"([illegible]) [illegible] दो खण्डों म विभाजित है. इस उपन्यास म आये अप्रवासी भारतीय कुलियों की ममान्तक कथा का चित्रण हआ है.

कोठियों म रहनेवाले हर आदमी की व्यथा, नरक की जिन्दगी, बह बेटियों की इज्जत लूटना गली गलौच, [illegible] [illegible], [illegible]कों द्वारा मजदूरों का शोषण आदि.

मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास –

मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासों की जब चचा करते है तो रामदेव धुरंधर जी का महत्त्व पूण उपन्यास "[illegible]" जिसे मनोविश्लेषणात्मक सामाजिक उपन्यास है. रामदेव धुन्धर ने अपने इस उपन्यास म मॉरीशस देश पर पाश्चात्य का अधिक प्रभाव, [illegible], फ्रेंच और अंग्रेजी का वचस्व, [illegible], भ्रष्टाचार सभी मुद्दों की अभिव्यक्ति इस उपन्यास म हई है.

विनोदा इंग्लड से वकालत पढ़कर आई है विनोदा अपने देश की युवा पीढ़ी की प्रतीक है, [illegible] सामाजिक मूल्य का आकषण है लेकिन वास्तविकता की पहचान नहीं है. उपन्यास म विनोदा नरद्र, नरद्र – [illegible],[illegible]–[illegible], [illegible] –[illegible]–[illegible], [illegible],अखाड़ेबाज लोगों का चित्रण है. [illegible] हरिदेव सरजू बड़ी मछली और ध्यानचंद छोटी मछली के प्रतीक [illegible]

[illegible]: खण्डों म विभाजित है, [illegible] 2008 [illegible] ([illegible],[illegible],[illegible])[illegible] म प्रकाशित हए तिन हजार पन्नो म प्रकाशित हआ.

प्रथम तीन खण्डों म भातीय मजदूरों के प्रथम आगमन स[illegible], [illegible] व् आथिक पृष्ठभूमि को औपन्यासिक ढंग से पात्रों और घटनाक्रम के माध्यम से पिरोया है, [illegible]

[illegible] लेखक की भाषा म जिस प्रकार से संप्रेष्य धमिता द्रष्टिगत होती है उसके आधार पर कह सकते है कि भारतेतर लेखक की भाषा के प्रति सजगता और योग्य प्रयोग बड़ी सटीकता [illegible]

- **रामदेव धुरंधर के सामाजिक उपन्यास –**

[illegible]([illegible]) [illegible] ([illegible])[illegible] समाज म परिवार म पति के व्यवहार से पीडिता की [illegible]([illegible])[illegible]

[illegible] –([illegible])

[illegible] व्यवस्था के अंतविरोधों से टकराहट रामफल, [illegible], [illegible], [illegible] राउत के दुष्कृत्यों की सजा किस प्रकार भुगत रहे ह लेखक कहते ह –"[illegible]

[illegible] राजनीति भ्रष्ट हो [illegible] उसी तरह राउत जैसे चरित्रों की भरमार [illegible].राज शेखर भी मॉरीशस के वर्त्तमान जीवन का एक प्रतीक है. [illegible] प्र[illegible] त्र [illegible], [illegible], [illegible] मॉरीशस म यह खेल बहत खेला जाता है. इधर के उपन्यासों म मने इन बातों को उठाया है. [illegible]. रामफल की मृत्यु जैसी घटना अभी तो नहीं हो[illegible], परंतु शुरू शुरू म जब स्वतंत्रता मिली थी, तब मुसलमान और क्रियोल जातियों म संघष छिड़ा था. रामफल तभी का मेरा चरित्र है."([illegible])[illegible] सामाजिक ऐतिहासिक द्रष्टि से अपनी रचनाओं म मॉरीशस समाज भारतीय समाज के विभिन्न पक्षों को लिया है. [illegible]नत के बाद रामदेव धुरंधर का हिंदी के क्षेत्र म विशेष योगदान रहा है. [illegible], [illegible], [illegible], [illegible].

[illegible] "[illegible]" ([illegible]) प्रवासी जनों म व्याप्त गरीबी, [illegible], कुरीतियों को समाप्त करने के लिए डा.कैलाश का जो संघष है वह निरंतर जारी रहता है चाहे सामाजिक रूप म हो राजनीतिक रूप म सभी स्थानों पर केवल संघष ही करना पड़ता है. जिससे अपने आप द्वारा हआ मानता है. [illegible]

[illegible] "[illegible]"([illegible]) लेखक विष्णु दत्त मधु का सामाजिक उपन्यास है. [illegible] औरत का घर कैसे बबाद होता है और सामाजिक परिवतन लाकर उस बबादी को कैसे रोका जा सकता है यही [illegible]

[illegible] "[illegible]"([illegible])सामाजिक अंतर्द्वंदों का चित्रण हआ है. [illegible] बंधनों और प्रेम का अंतर्द्वंद दिखाया है. [illegible] मालिकों द्वारा अप्रवासी जनों के साथ जो दुव्यवहार, [illegible], [illegible] –[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], रामलीला आदि सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थिति यों का उपन्यास म बड़ी ही बखूबी से अभिव्यक्ति किया है.

[illegible] "[illegible]"([illegible]) [illegible] समाज म नारी के चरित्र के साथ खेलने वाले समाज के दरिंदों का पदाफाश किया है. [illegible] "[illegible]" ([illegible]) [illegible] सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना सं[illegible] समाज म व्याप्त कुरीतियों को बेनकाब [illegible]

- **मॉरीशस के उपन्यासों की भाषा शैली -**

भाषा सम्प्रेषण का आधार होती है. भाषा के माध्यम से ही पाठकों तक भावों का और विचारों का वहन होता है. उपन्यासों की भाषा विशेष घटना, [illegible]

[illegible],लोकोक्तियों का प्रयोग होता है. मॉरीशस म फ्रेंच, क्रि[illegible], [illegible] प्र[illegible]
उदू एवं फारसी शब्दों का भी प्रयोग होता है. अप्रवासी भारतीयों को भाषा म भोजपुरी का अधिक प्रयोग होता है. मॉरीशस म क्रिओली बोली वहां जन भाषा है. सम्पक को भाषा है, व्यवहार को भाषा है.

[illegible] प्रमुख उपन्यासकार है. [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] प्रकृति का भी अधिक मात्रा म चित्रण किया गया है. [illegible] प्र[illegible] [illegible], वहां के ग्रामीण शब्द, तद्भव शब्दों का प्रयोग हआ है.

- [illegible] वरों म क्रियोली शब्दों का प्रयोग –

1.[illegible], [illegible].

[illegible]

[illegible].

[illegible].

[illegible].

मुहावरे

[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible].

- [illegible] –

1.[illegible].

[illegible]

[illegible]

[illegible].

शिल्प प्रयोगवादी उपन्यास –

मॉरीशस के उपन्यास म कहीं कहीं शैली के स्तर पर तो कहीं कहीं कथ्य एवं प्रस्तुति के स्तर हआ है.[illegible] “[illegible]”पत्रात्मक शैली म लिखा गया है.[illegible] “[illegible]”, “[illegible]”, “[illegible]”, “[illegible] प्र[illegible]”, “[illegible]”, “[illegible]”, “[illegible] ” [illegible] उपन्यासों म प्रयोग हआ है.

शैली भावों और विचारों को व्यक्त करने की कला का नाम है. □□□□ □□ □□□□ □□□□□□, □□□□□, □□□□श, □□□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□. □□□□ □□□□□□त्रों □□ □□रू □□□ □□□ □□ □□□□□ □मॉरीशस के उपन्यासों में सभी शैलियों का प्रयोग किया गया है. □□□ □□□ □ □□□□□□, रोचकता एवं सरलता आदि गुण भी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होते है.

जीवन शैली –

उपन्यासकार जब कोई अन्य पुरुष के माध्यम से कथानक की प्रस्तुति करता है, □□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□ □□ "□□□ □□□□□","□□□□□ □□□□", "□□□□□", "□□ □□□□ □□□", "□□□□□□□□□", "□□□ प्र□□", "□□□□ □□ □□□", "□□□ □□□□ □□□ □□□□", "□□ □□", "□□ □□□□ □□ □□□□", "□□□□ □□□□", "□□ प्र□□□", "अस्ति अस्तु" □□. □□□□□ □ □□□□ □□□ □□ प्र□□ □□ □□

आत्मकथात्मक शैली –

□□ □त्त□ □रू "□" की शैली पर कथानक की रचना करता है तो आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग क□ □□□ □□□ □"□□ □□□ □□□□ □□□", "□□ □□□ □□□", □□□□ □□□□□□", "□□□□", "□□□□ □□ □□□□", "□□ □□□□ □□" □□.

पत्रात्मक शैली –

मॉरीशस में पत्रात्मक शैली में सम्पूर्ण उपन्यास नहीं लिखा गया है, □□□ "□□□□□□□□□",□□□□□ □□□□", "□□□□□ □□□□", "□□□□□ □□ □□□", "□□□–□□□□□□□श", "□□ –□□", "□□□□ □□□□ □□", "क्यों न फिर से" □□ "□□ प्र□□□" □□.

"□□□ □□□□□" उपन्यास में डायरी शैली का आधार नहीं बनाया है किन्तु "□□□ □□□□□" □□□□□ □ □□□□□□□ पुस्तक जिसमें सोमा और संतू की कथा है, □□ -□□ □□□□ □□□ □□□□□ □"□□□□" □□ "□□□ □□ □□□" इन दोनों उपन्यास में कथावस्तु क्रम से न होकर बीच –बीच में कहीं से भी शुरू हो जाती है. □□□ □□त्र मनोविश्लेषणात्मक पद्धति उपन्यासों में देखा जा सकता है.कुछ उपन्यासों में प्रतीकात्मक शैली का भी प्रयोग हुआ □□

निष्कष –

एक साहित्यकार अपने आसपास के समाज के विचारा और भावनाओं को समष्टि के रूप म व्यक्त करके समाज म [illegible], [illegible], [illegible] .साहित्य ही अन्याय और शोषण के खिलाफ हमारे मन म विद्रोह का अग्नि प्ज्वलित करता है, [illegible] मानव मात्र के कल्याण का भावना से भर देता है. [illegible] के उपन्यासा म समाज का विभिन्न समस्याओं का जाँच पड़ताल है.

मॉरीशस के उपन्यासा म विविध सोपाना से गुजरना और विविध भावनाओं को उजागर करना एक विशेषता [illegible]उपन्यास सम्राट अभिमन्यु अनत के अकेले साहित्यकार के उपन्यास म मॉरीशस समाज का समग्रता देखी [illegible], [illegible], प्र[illegible], किसाना का संघष, [illegible], कस्टम का स्थिति, विसंस्कृतिकरण के चलते अप्रवासी समाज के बदलते हालात, [illegible]. [illegible]न्यासा म आम आदमी का अस्मिता या अस्तित्व को स्थान मिला है. [illegible]देश[illegible] जीवन म व्याप्त आथिक विषमताओं और विसंगतिया, [illegible], [illegible] –[illegible], [illegible], [illegible]म्प्र[illegible], प्रेम एवं विवाह के बारे म अस्वस्थ चिंतन के प्रति चेतना के सन्दभ म प्रकाश लाना है. [illegible] गुणा को स्थापित करना,संघषा को बयान करना तथा समाज के सजीव चित्र को हबह प्रस्तुत करना उपन्यास का [illegible]देश[illegible]

:- सन्दभ सूची -:

1. मॉरीशस का हिंदी साहित्य तथा अन्य निबंध : □□.□□श्व□ □□□ □□□□□□: □□□

2.□□.मुनीश्वर लाल चिंतामणि से लेखक का साक्षात्कार :□□□□□-□□/1/□□□□ □□.□□श्व□ □□□ □□□□□□□ □□ □द्ध□

3. □□□□ □□□□त□ □□ □f□□□ : श्री सोमदत्त बखौरी : □□□

4. □□□□ □ □□□□□ □□ □□□□□ (□.प्र□□.□□.प्र.): □□.□□□□□□□□□□□□:□:□□□□

5. श्री कृष्णलाल बिहारी पहला कदम :□□□

6. Hindi novel of Mauritius, though only a few years old,is today a pride for Mauritius literature.today it has reached a record number of over thirty and are read, discussed and praised through out the world.awarded on different occasions of course ot in Mauritius –by-A- unnuth-Le mauricien mercredi 20 Aoot-1986-P-4

7. □□□□□ □ □□□□□□ □□□□□□□□□ :□□□□□ □तृ□ □□□□□ □□□□,□□□ □□□□□ ,□□ □□ल□□ , □□□ पाण्डेय प्रवासी संसार: □□□-19

8. मॉरीशस म हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास : □□.श□□□□ □□□□□ :□□□

9. □□ □□□□□: □□□□न्□□□□□: –□□□

10. □□ □□□□□: □□□□न्□□□□□:□□□

11. मॉरीशस म हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास: □□.श□□□□ □□□□□: □□□□□-□□□